

नाटक के तत्व

नाटक साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें सभी लालित कलाओं का पूर्णरूपेण संगम होता है। सभी कलाओं का संगम नाटक में होता है। संस्कृत के आचार्यों ने नाटक के तीन तत्व स्वीकार किये हैं - ① व्यङ्ग्यगठन ② नायक ③ रस। अभिनय की दृष्टि से नाटक के चार तत्व माने जाते हैं :-

1. कथावस्तु
2. चरित्र/पात्र
3. रस
4. अभिनय

1. कथावस्तु :- कथावस्तु से तात्पर्य नाटक में वर्ण्य विषय से है अर्थात् समूह कथा। इससे दो प्रकार हैं - ① आधिकारिक कथावस्तु ② प्रासंगिक कथावस्तु। आधिकारिक कथावस्तु नाटक में प्रारम्भ से अंत तक पायी जाती है, जबकि प्रासंगिक कथाएँ लघु होती हैं जो कथावस्तु के साथ चलकर कुछ समय बाद स्वतः समाप्त हो जाती हैं। वर्तमान में कथावस्तु आधिकारिक ही ज्यादा प्रयोग की जा रही है।

2. चरित्र/पात्र :- किसी भी नाटक में सफलता के लिए हीरोइन चरित्र/पात्र की होती है। यही नाटक के महत्व एवं सौन्दर्य की प्रदर्शित करते हैं। पात्रों के द्वारा की गई क्रिया-प्रतिक्रिया ही किसी नाटक को प्रभावी रूप प्रदान करते हैं। नाटक में नायक, नायिका, उपनायक और कुछ गौण पात्र भी होते हैं। नाटक में भूलभ्रम नायक-नायिका पर निर्भर रहता है। नाटक में नायक के चार प्रकार हैं - ① हीरोदास ② हीरो लालित ③ हीरो प्रसांत ④ हीरो बद्ध

नाटिका के भी दो प्रकार हैं - (1) स्वकीया नाटिका (2) परकीया नाटिका।
 3. रसः - नाटक का तीसरा तत्व रस है। यह काल्य और नाटक दोनों की आत्मा है। प्राचीन नाटकों में हंसार, करुण एवं वीररस में से किसी एक रस की प्रधानता होती थी। अंत में सत्य की जीत होती थी जिससे दर्शक आनंदित होते थे। जिस प्रकार बहुविध भोजन के भोजन का पूर्ण आनंद पाने के लिए भूख और स्वादविवेक आवश्यक है, उसी प्रकार रसानुभूति की पूर्णता के लिए सहृदयता संवेदनशील संस्कारों और विवेक की आवश्यकता रहती है, नाटक में रस इसी भाव की उद्बोधित करता है।

4. अभिनयः - नाटक, रूपक या दृश्य काल्य का प्रधान तत्व अभिनय है। समस्त उपायसु, चरित्र, धर्मों एवं भावों का प्रकाशन अभिनय द्वारा ही किया जाता है। देश, काल और परिस्थिति के अनुसार अभिनय के साधनों और रूपों में परिवर्तन और विकास होता रहा है। आजकल वैज्ञानिक साधनों के उपलब्ध हो जाने से अनेक धर्मों और स्थितियों का दिग्दर्शन इनके द्वारा कराया जाता है और इनके सांकेतिक साधनों की अब आवश्यकता नहीं। उसी प्रकार अभिनय के रूपों और सिद्धियों में भी बहुत परिवर्तन हो गया है। उदाहरण के लिए स्वगतभाषा जनानांति, अपवारित आकाशभाषित आदि के अभिनय अब लय हो गये हैं क्योंकि इनको रंगमंच की व्यवस्था या अन्य वैज्ञानिक साधनों के द्वारा उबर किया जा सकता है।

इस प्रकार नाटक का रंगमंच से सीधा संबंध है। अतः इसे दृश्यकाल्य कहा जाता है। किसी देखा, सुना तथा महसूस किया जा सके। अतः फल अभिनीत नाटक का आदर्श होता है। अन्य विद्याओं में अभिनय एवं मंच की आवश्यकता नहीं है। शाल्विक अनुभव स्पष्ट माना जाता है।